नये प्रभात की अँगड़ाइयाँ

स्वागत के स्वर

पं. अक्षय चंद शर्मा

कुछ भी नहीं किया
केवल दिया, दिया, दिया
जीवन को
सपनों की छवि से
भर लिया,
अंतर की ज्वाला में
जला-बुझा किया
टेरता पपीहा-सा
'पिया, पिया, पिया !'
कुछ भी नहीं किया
केवल दिया, दिया, दिया
चन्दन-सा तन-प्राण
घिसता रहा,
गौरव, गति, गंध, गान
रिसता रहा
एक दिया जला
दूसरा बुझा लिया
कुछ भी नहीं किया
केवल दिया, दिया, दिया

महाकवि गुलाब खंडेलवाल का सम्पूर्ण काव्य-जीवन उनकी उपर्युक्त कविता की एकमात्र इस एक पंक्ति में समाहित है --- बिंदु में सिन्धुवत् ---

केवल दिया, दिया, दिया

जिस प्रकार मेघ अपने को मिटाकर धरती को शस्य-श्यामल

बनाता है, दीप स्नेह्वर्तिका को प्रज्ज्वलित कर आलोक बिखेरता है, उसी प्रकार इस प्रतिभा-पुत्र महाकवि ने गीति-काव्य, प्रबंध-काव्य, मुक्तक-रचना तक ही सीमित न रहकर आंग्ल रचना काव्य-सरणि के सॉनेट, ओड आदि को भी भारतीय परिवेश से सजाया है। उर्दू की ग़ज़ल का उसका अभिनव प्रयोग भी भारतीय पृष्ठभूमि पर हिन्दी के प्रवाह में अपनापन लिये है।

संसार के प्रचंड आकर्षणों एवं विकर्षणों के बीच यह महाकवि गत अर्द्ध-शताब्दी तक निष्कंप दीपशिखावत् अपने लक्ष्य पर स्थित है --- यह सातत्य योग स्वयं में एक सिद्धि है। प्राक्तन संस्कार-संपन्न, अनुभूति-प्रवण सहज कल्पना का गीति-खग जब महाकाव्योचित औज्ज्वल्य, गाम्भीर्य एवं औदात्त्य के रजत-शिखरों का स्पर्श करता है तो सहृदय पाठक विस्मय-विमुग्ध हो कवि की महान उपलब्धि के सामने श्रद्धावनत हो जाता है। 'अहल्या' जैसी गौरवमयी कृति हिन्दी की शाश्वत उपलब्धि है, जो महाकवि 'निराला' की 'राम की शक्ति-पूजा' में प्रतिष्ठित है।

श्री गुलाबजी एक कवि हैं; भावुक, तरल, सरल, मधुर, आत्मीयता-संपन्न कवि, जो अहर्निश निश्छल, भावना-संपन्न, स्वप्निल एवं ऋजु है। कवित्व एवं व्यक्तित्व दोनों में ऋजुता, दोनों में सम्पन्नता --- दोनों अन्योन्याश्रित !

एक ओर जहाँ कवि में कल्पना-वैभव है, रोमांस है, प्रेम की, यौवन की, भावना की तरल उर्मियाँ हैं, प्रेम और यौवन का आकर्षण है, प्रकृति के सुरम्य फलक का माधुर्य है, वहीं दूसरी ओर गाँधी युग की एक निष्ठा, एक उत्सर्गपरक भावधारा --- सभी कृतियों के अंतराल में प्रवाहित है।

कवि में विकास-क्रम नहीं है। हमेशा वह नये-नये पथ का पथिक, नये क्षितिजों का उद्घाटक, नये आयामों का यात्री है --- वह क्षुण्ण पथ पर चलने का अभ्यस्त नहीं। अपनी उपलब्धियों को हमेशा छोड़ देता है और नूतन भावोन्मेष के साथ नूतन सृष्टि की सर्जना

करता है।

वह अपने लिए नई चुनौती का आवाहन करता है, फिर संघर्ष, साहस, स्फूर्ति एवं मौलिकता के साथ सफलता के सौध शिखर पर आरोहण।

अपने प्रवासी दिनों के क्षणों में समृद्ध अमेरिका की ऊपर से तृप्त, भीतर से क्लांत धरती पर बैठकर यह महाकवि नवीन भावोर्मियों से उद्वेलित होता है। उसी का यह प्रतिफलन है --- 'नये प्रभात की अँगडाइयाँ'। कवि में यहाँ भाषा की सरलता है, भावों की निश्छल अभिव्यक्ति है, कल्पना की सुरभि है, और है अपने प्रति अभिव्यक्ति की ईमानदारी। कवि की यह स्वच्छ, स्वच्छंद भावधारा सतत प्रवाहित है --- यही इस कृति की अन्तःसुषमा है।

कितने हज़ार वर्षों से यह वनवासिनी
गले में शत-शत नद-निर्झरों का हार पहने
झीलों के दर्पणों में झिलमिलाती
गिरिमालाओं की लटें छितराये
हमारे लिये अपना आँगन बुहार रही थी

* * *

रंग-बिरंगे फूलों का मेला लगा है,
सतत आलिंगन में बाँहें फैलाती
अल्हड़ तरुणियों-सी तरु-शाखाएँ
चुंबनों से लदा हवा का झोंका,
सब कुछ अनूठा है, सब कुछ अलबेला लगा है

कवि इस प्रकार अमेरिका की धरती पर पाँव रखते हुए नई उष्मा का अनुभव करता है।

अच्छा हुआ यह महाकवि ढलती वय में अमेरिका गया --- कवि चिर-तरुण है --- अतः आकर्षण स्वाभाविक है --- वय अनुभवों से भरी है, अतः यह आकर्षण दिव्य रूपांतरण के रूप में चित्रित है ---

यदि यौवन के पहले चरण में

मैं इस भूमि पर चरण धरता
तो पता नहीं, कैसा अनुभव करता।
आज तो प्रत्येक मुस्कुराती हुई तरुणी
मुझे देव-प्रतिमा के गले में पड़ी
फूलों की माला-सी दिखाई देती है।
उसके दुग्ध-धवल अंगों की निर्मल कान्ति
हवन-कुंड से उठती ज्वाला-सी दिखाई देती है।

कवि के भीतर जो मौन-मनीषा है --- वह देवप्रतिमा के फूलों में, दुग्ध-धवल अंगों में, हवन-कुंड की स्वर्णिम शिखा में --- इस उद्दाम तारुण्य को बदल कर एक पूजा के वातावरण की सर्जना करती है। कवि अनुभव करता है ---

रूप के माध्यम से ही
अरूप को पाया जा सकता है

लगता है, कवि किन्हीं क्षणों में मनीषी बनने की नियति लेकर आता है --- जहाँ थोड़ा-सा कवि चूका कि कविता का क्षरण प्रारम्भ हो जाता है; पर यह महाकवि कविता की भूमि से हमेशा जुड़ा है --- चाहे भविष्य के गवाक्ष से कभी-कभी एक सुदूर अदृश्य में कटाक्ष-पात् मात्र कर ले --- पर पुनः स्वप्निल आँखों से जगत् को निहारने लगता है।

'तुम्हारा पत्र' एक रस-स्निग्ध कविता है। भावुकता से प्रकम्पित, सरस एवं स्निग्ध !

यहाँ तुम्हारी उँगलियाँ काँपी थी,
यहाँ एक आँसू की बूँद गिरी थी,
यह तिरछी लिखावट साक्षी है,
यहाँ तुम्हारी सशंक दृष्टि द्वार की ओर फिरी थी।

कवि अनेक भावनाओं के झंझावात में अपने को पाता है, आत्म-निरीक्षण के क्षण कवि के भीतर नैतिक मूल्यों के विघटन की पीड़ा उभारते हैं ---

कागज़ पर तो एक-से-एक चित्र उभर आते हैं
जीवन में उनका उतरना कठिन है

कवि के गीतों में भक्ति-भावना का उन्मेष, देने का माधुर्य, पीड़ा के दंश और निराशा एवं पछतावे के भीतर आशा एवं उल्लास के स्वर उभरते गये हैं।

आश्चर्य है, गुलाबजी का कवि हमेशा कितना तरुण है, वह सतत नये-नये रूपों में, नई भंगिमा लिये अपनी नई अदा लेकर उपस्थित होता है। रचना का वैविध्य, कवि का निजी वैशिष्ट्य है, यही इस प्रतिभापुत्र, सहृदय का हमारे साहित्य को अनवद्य वर है। कवि का लक्ष्य है, आगे और आगे।

सितारों से आगे जहाँ और भी हैं
अभी इश्क के इम्तिहाँ और भी हैं

विश्वास है --- कवि के अनथके चरण पुनः-पुनः जीवन के एकांत, निभृत, अयुक्त कोनों की मुहुः-मुहुः तलाश करते हमें मिलते रहेंगे ---

कलकत्ता अक्षयचंद शर्मा